अंक 273 वर्ष 57

भाषा

सितंबर–अक्तूबर 2017

विशेषांक

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

सत्यमेव जयते

केंद्रीय हिंदी निदेशालय
भारत सरकार

Skill India

ISSN 0523-1418
भाषा (द्वैमासिक)
वर्ष : 57 □ अंक : 1 (274)
सितंबर–अक्तूबर, 2017

संपादकीय कार्यालय
केंद्रीय हिंदी निदेशालय,
उच्चतर शिक्षा विभाग,
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार,
पश्चिमी खंड-7, रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110066
वेबसाइट : www.hindinideshalaya.nic.in
ईमेल : bhashaunit@gmail.com

बिक्री केंद्र :
नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, सिविल लाइंस, दिल्ली - 110054
सदस्यता हेतु ड्राफ्ट नियंत्रक, प्रकाशन विभाग, दिल्ली के पक्ष में भेजें।

मूल्य :		
स्वदेश में : एक प्रति :	₹ 25/–	(डाकखर्च अतिरिक्त : ₹ 11/–)
वार्षिक :	₹ 125/–	(डाकखर्च अतिरिक्त : ₹ 66/–)
विदेश में : एक प्रति :	£ 1 अथवा $ 2	(डाकखर्च सहित)
वार्षिक :	£ 6 अथवा $ 12	(डाकखर्च सहित)

वेबसाइट : www.deptpub.gov.in
ई–मेल : pub.dep@nic.in
दूरभाष : 011-23817823/ 9689
फैक्स : 011-23817846

पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे भारत सरकार या संपादन मंडल का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

5609 CHD/2017—1B

भाषा
सितंबर–अक्तूबर 2017

अनुक्रमणिका

निदेशक की कलम से
संपादकीय
आपने लिखा
आलेख

1. दीनदयाल उपाध्याय : सांस्कृतिक राष्ट्रवाद	डॉ. महेश चंद्र शर्मा	9
2. दीनदयाल उपाध्याय, भारतीय संस्कृति तथा भाषा	डॉ. श्याम सिंह शशि	15
3. दीनदयाल उपाध्याय : जन्मशती वर्ष के संकल्प	विजय कुमार	20
4. सबका साथ : सबका विकास बनाम अंत्योदय	अशोक बजाज	27
5. पं. दीनदयाल उपाध्याय और एकात्म मानववाद	डॉ. कमल किशोर गोयनका	29
6. एकात्म मानववाद और भारतीय चिति	प्रो. त्रिभुवननाथ शुक्ल	34
7. एकात्म मानववादी का साहित्यिक दर्शन	डॉ. रचना विमल	38
8. आइए बनाएँ एकात्म मानव दर्शन पर आधारित मीडिया	संजय द्विवेदी	44
9. एकात्म मानववाद और धर्म	नवीन मणि त्रिपाठी	47
10. पं. दीनदयाल उपाध्याय: सामाजिक और एकात्म मानववादी दर्शन	डॉ. दिनेश कुमार शुक्ला	54
11. पं. दीनदयाल उपाध्याय की लगन, एकात्म मानववाद, चिंतन व मरण से भारत ले सीख	प्रो. आनंद वर्धन	58
12. एकात्म मानववाद की वैचारिक पृष्ठभूमि	किरण राठौर	62
13. पंडित दीनदयाल उपाध्याय के एकात्म मानववाद की प्रासंगिकता	डॉ. अमित रंजन सिंह	67
14. मानवीय मूल्यों के संवाहक : पं. दीनदयाल उपाध्याय	डॉ. हरिप्रसाद दुबे	74
15. भारतीय जीवन-मूल्य और पं. दीनदयाल उपाध्याय	माधव गोविंद वैद्य	80
16. पंडित दीनदयाल जी और प्राकृतिक समरसता	रमेश पतंगे	84
17. समरसता के संवाहक पं. दीनदयाल उपाध्याय जी	शैलेंद्र प्रसाद सिंह	88
18. पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी का समय और विचार	डॉ. दिनेश प्रताप सिंह	91
19. पं. दीनदयाल उपाध्याय : आदर्श पत्रकारिता के पुरोधा	लोकेंद्र सिंह	96

20. पं. दीनदयाल उपाध्याय का शैक्षिक दर्शन	डॉ. सुधाकर प्रसाद सिंह	103
21. पं. दीनदयाल उपाध्याय और उनका जीवन-दर्शन	डॉ. सुरुचि मिश्रा	107
22. पं. दीनदयाल जी की वैचारिक क्रांति-दर्शिता	डॉ सी. जयशंकर बाबु	112
23. पं. दीनदयाल उपाध्याय और उनकी चिंतन-दृष्टि	सोना पाठक	118
24. राष्ट्रवाद के मूलमंत्र को जागृत करता उपन्यास 'जगद्गुरु शंकराचार्य'	शैलेंद्र कुमार शुक्ल	122
25. पं. दीनदयाल उपाध्याय : एक महात्मा	जमना प्रसाद गुप्त	126
26. प्रेरक विभूति पं. दीनदयाल उपाध्याय जी	डॉ. सुनील कुमार सारस्वत	132
27. बहुत याद आते हैं दीनदयाल जी	सर्वेशचंद्र शर्मा	135
28. समन्वयवादी पं. दीनदयाल उपाध्याय	प्रो. जगत पाल सिंह तोमर	140
29. संस्कारशीलता के उपासक- दीनदयाल उपाध्याय	डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली	144
30. दीनदयाल उपाध्याय की दृष्टि में अल्पसंख्यक और भारत	भगवान अटलानी	147
31. पंडित दीनदयाल उपाध्याय का आर्थिक लोकतंत्र	प्रो. ओमप्रकाश पांडेय	152
32. पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अर्थ-नीति	प्रसेनजीत कुमार	156
33. 'नींद क्यों रात-भर नहीं आती...'	डॉ. अनुशब्द	158
34. वर्तमान समाज में पंडित दीनदयाल उपाध्याय के विचारों की प्रासंगिकता	डॉ. आलोक रंजन पांडेय	162
35. मूल्य, आदर्श और प्रतिभा की त्रिवेणी : पं. दीनदयाल उपाध्याय	प्रो. दिनेश चमोला 'शैलेश'	166
36. 'राष्ट्रवाद' - दीनदयाल उपाध्याय की नजर से	डॉ. प्रतिष्ठा श्रीवास्तव	169
37. एकात्म मानववाद : भारत-बोध की पुनर्गवेषणा	बृजेंद्र पांडेय	171
प्राप्ति स्वीकार		178
संपर्क सूत्र		179

'नींद क्यों रात भर नहीं आती...'

डॉ. अनुशब्द

पं. दीनदयाल उपाध्याय का 'एकात्म मानववाद' एक विचार नहीं है, सिद्धांत है। यह एक जीवन-दृष्टि नहीं, समग्र जीवन-दर्शन है। इसकी व्याप्ति व्यक्ति से लेकर समष्टि तक, प्राचीन से लेकर अर्वाचीन तक, विकृति या अपसंस्कृति से लेकर संस्कृति तक है। यह मनुष्य और समाज में, व्यक्ति और प्रकृति में द्वंद्व और संघर्ष का प्रत्यय नहीं है। यह उनके बीच सहयोग और सौहार्द का दर्शन है, सामंजस्य और समन्वय का निदर्शन है तथा सामरस्य का सार्थक प्रदर्शन है। मुरली मनोहर जोशी का यह कथन सर्वाधिक उपयुक्त है कि "एकात्म मानववाद स्वस्थ समाज की रचना के लिए जीवन-दर्शन एवं विचार-दर्शन के रूप में हमारे सामने उपस्थित है।"[1] समतामूलक समाज के लिए उसकी उपस्थिति निहायत जरूरी है। संभवत: इसलिए भी विश्वग्राम के इश्तहार पर भारतीय चिति यानि अस्मिता के विनाश की जो इबारत लिखी जा रही है, उसको यही मानवतावाद की अवधारणा विनष्ट करने में सक्षम है। भारतीय संदर्भों में अपने आपको परिभाषित करने में यही जीवन-चिंतन समर्थ है। इसलिए इसका समग्रता में अनुशीलन आज की जरूरत है और पूरी तन्मयता और आत्मीयता के साथ स्वीकृति ही आज एकमात्र विकल्प है।

पं. दीनदयाल उपाध्याय जी ने भारतीय संस्कृति का गहन अध्ययन किया था और इसके सत्व की पड़ताल करते हुए अनुभव किया था कि जहाँ भारतीय संस्कृति समग्रता का दर्शन है, वहीं पाश्चात्य संस्कृति आंशिकता का चिंतन है। हमारी संस्कृति जहाँ किसी विषय को संपूर्णता में देखती है, वहीं यूरोपीय संस्कृति उसको टुकड़ों में बाँटकर देखती है। टुकड़ों में बाँटकर देखना व्यावहारिक पद्धति हो सकती है, किंतु इससे सत्यांश का ही अनुभव होता है, सर्वांश का नहीं। भारतीय नजरिया 'गज-अंध-न्याय' में विश्वास नहीं करता। लिहाजा पंडित जी नए-पुराने मूल्यों के चयन में वैज्ञानिक दृष्टि से इत्तेफाक रखते थे। उन्होंने भारतीय मनीषा की इस सूक्ति को आत्मसात किया था :

'पुराणमित्येव न साधु सर्वं न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।

सन्त: परीक्ष्यान्तरद्भजन्ते मूढ: परप्रत्ययनेयबुद्धि:॥[2]

इसी साधु दृष्टि को अपनाते हुए वे कहने में समर्थ हो सके हैं कि "हजारों वर्षों में हमने जो कुछ किया है, वह विवशता में हमें मिला हो या हमने प्राप्त किया हो, उसमें से हर वस्तु को हटाकर नहीं चल सकते ... बाहरवालों ने जो कुछ किया, हम केवल उसका प्रतिकार ही नहीं करते रहे, हमने भी परिस्थितियों के अनुसार अपने जीवन को ढालने का प्रयत्न किया। इसलिए उस सब जीवन को भुलाकर तो नहीं चल सकते ..."[3] गरज कि अपनी आतंरिक संपदा और बाहरी प्रभावों में श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है, उसको नजरअंदाज करना न्यायसंगत नहीं और न विवेकसंगत ही। कारण कि हम अपने स्वस्थ भविष्य और सार्थक जीवन-चर्या के लिए कल्याणकारी तत्वों एवं मंगलकारी मूल्यों को अपनाकर ही प्रगति-पथ पर अग्रसर हो सकते हैं। महज भारतीय और पाश्चात्य रूढ़ियों के अंधानुकरण से हम आगे नहीं बढ़ सकते और न ही विश्व में अपनी पहचान और निजता को अक्षुण्ण रख सकते हैं। इस प्रसंग में यह भी ध्यातव्य है कि कोई भी विचार सार्वकालिक या सार्वभौमिक नहीं होता क्योंकि उसकी जमीन और आबोहवा अलग-अलग होती है। चिकित्सा विज्ञान में लिखा भी

भाषा ISSN 0523-1418